अमरीका में स्कूली हिंसा

❑ नेहपाल सिंह वर्मा

अमरीका के मूल निवासी वैसे तो काले इंडियन हैं, जिन्हें पहले रेड इंडियन कहते थे, परंतु उन मूल अंग्रेजों की संतान को जो इंग्लैण्ड से आकर यहां बस गये, अब आम भाषा में अमरीकी कहते हैं । इन अमरीकी परिवारों में बच्चों के लालन-पालन पर बहुत ध्यान दिया जाता हैं, प्रसव दवाखानों में होते हैं । दवाखानों में नर्स और डाक्टर बहुत अच्छा व्यवहार करते हैं । बच्चे के जन्म लेते ही उसके फोटो निकाले जाते हैं, और उन फोटुओं को तथा जन्म के समय तथा तिथि के साथ दिये गये प्रमाण पत्र को संभाल कर रखते हैं । कई परिवारों में बच्चे के जन्म के समय एक रजिस्टरनुमा अलबम भी तैयार किया जाता है, जिसमें उस बच्चे के बडे होने के साथ साथ स्कूल के जीवन तथा अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं को अंकित किया जाता है। इस रजिस्टरनुमा अलबम को विद्यालयों में भी दिखाया जाता है, जिससे उस बालक या बालिका की संपूर्ण जानकारी मिलती है । बच्चों को दो-ढाई वर्ष की आयु में विद्यालय में भेजा जाता हैं वहां उनके भोजन, विश्राम की संपूर्ण व्यवस्था रहती है । बच्चों को प्रतिमास डॉक्टर के पास चेकअप के लिए ले जाते हैं, जहां उनके वजन तथा आहार पर ध्यान दिया जाता है । बच्चे की चिकित्सा का खर्च बीमा कंपनी देती है । बच्चों को किसी प्रकार

का शारीरिक दंड देने का अधिकार न परिवारजनों को हैं, न विद्यालय के अध्यापकों को । शारीरिक दंड की घटना होने पर कठोरता से पुलिस कानूनी कार्यवाही करती है । बच्चों से बहुत लाड प्यार का व्यवहार किया जाता है । अधिक प्यार और कानूनी सुरक्षा के कारण कभी कभी छोटे बच्चों में हिंसा की भावना जागती है। छोटी सी बात पर घर में रखी पिस्तौल या बंदूक से बच्चे गोली चला देते हैं । समाचार पत्रों में आप प्राय: पढ़ते रहते हैं कि छोटी आयु के बच्चों ने पालकों, अध्यापकों या अपने साथियों पर गोली चलायी है। रिवाल्वर या बंदूक के लिए लाइसेंस की आवश्यकता नहीं । घरों में प्राय: हथियार खुले रूप में रखे जाते हैं ।

बच्चों को 18 वर्ष की आयु तक सिगरेट और शराब खरीदने की अनुमति नहीं है, परंतु ये दोनों चीजें घर में मिल जाती है। मैंने सडकों पर प्रात:काल बस की प्रतीक्षा करते हुए बालक-बालिकाओं को खुलेआम धूम्रपान करते देखा है । हमारे घर के समीप बहने वाले नाले रूपी नदी के रेलवे पुल के पास प्राय: बच्चे शराब पीते और धूम्रपान करते थे । मैं जब सुबह घूमने जाता था तब बुझे सिगरेट के टुकडे ओर शराब की बोतलें इसका प्रमाण प्रस्तुत करती थीं। आजकल बच्चों में ड्रग्स का नशा बढ रहा है । जो बच्चे इस नशे के आदी हो जाते हैं, वे पैसों के लिए घरों में चोरी और हत्याएं भी करते हैं । ऐसे बच्चे अडोस-पडोस में भी हत्याओं में पकडे जाते हैं । मैंने 'न्यूयार्क टाईम्स' में एक समाचार पढा था, जिसने संपूर्ण अमरीका को झकझोर दिया था । एक विद्यालय में एक अध्यापक बहुत लोकप्रिय था । वह स्कूल के समय के बाद बच्चों को खेल, संगीत, नाटक आदि गतिविधियों में सहयोग देता था। वह कुंआरा था । वह इतना दयालु था कि एक सडक के कुत्ते को पाल रखा था और उसकी बहुत अच्छी देखभाल करता था । एक दिन उसकी हत्या हो गई । तीसरे दिन जब उसके फ्लैट से दुर्गन्ध आने लगी तब पुलिस ने उसे खोला । उसके सिर पर चोट के निशान थे । गला दबाकर हत्या की गयी थी । उसके बैंक से उसका कार्ड लेकर रुपये निकाले गये थे। पुलिस ने दो दिन के भीतर उसके हत्यारों को पकड़ लिया। हत्यारे अफ्रीकी थे और दोनों ही उसके शिष्य थे । उन दोनों को ड्रग्स के नशे के आदी होने के कारण स्कूल से निकाल दिया गया था । उन दोनों ने पहले उसके कुत्ते को मारा था, बाद में उसे रस्सी से बांधकर बैंक से पैसा निकाला था, तब उसकी हत्या कर दी थी। बैंक में पैसे निकालते समय वहां लगे वीडियों कैमरे में एक हत्यारे का चित्र अंकित हो गया था, जिसके कारण वे पकडे गये। बाद में पता चला कि वह अध्यापक अमरीका की किसी बडी कंपनी के करोडपति मालिक का बेटा था । अपने शौक के लिए उसने अध्यापक का व्यवसाय अपनाया था। सारे अमरीका के छात्रों ने इस हत्या पर शोक प्रकट किया था।

इसी प्रकार की एक और घटना ने भी मेरा ध्यान आकर्षित किया था। न्यूजर्सी में एक नवयुवक ने पीजा की दुकान लगायी थी। एक नौकर के सहारे परिश्रम के साथ दुकान को स्थापित करने में लगे उस नवयुवक की हत्या एक सुनसान जगह में उसकी मोटर में की गयी । हत्या के स्थान पर एक पुराना मकान था, जो वीरान था और जिसमें कोई नहीं रहता था। पुलिस ने दो दिनों के भीतर हत्या के आरोप में दो हाई स्कूल के बच्चों को पकड लिया । ये दोनो ड्रग्स के आदी थे । घर में पालकों को पैसों के लिए तंग करते थे। एक शाम इन दोनों ने उस पीजा की दुकान में फोन से पीजा का आर्डर दिया और जब दुकान बंद कर वह नवयुवक पीजा की डिलिवरी देने वहां पहुंचा, तब उस पर अंधाधुंध गोलियां चला दी गयीं । हत्या का उद्देश्य केवल अपनी खीझ मिटाना और शौर्य दिखलाना था। एक लडका कक्षा में अपने साथियों से कहा करता था कि वह कोई बडा कार्य करना चाहता है और उसने यह बडा कार्य किया था ।

इन घटनाओं से आप समझ गये होंगे कि अमेरिका में नाबालिग बच्चों को आसानी से शस्त्र मिल जाते हैं । प्राण लेना उनके लिए खेल जैसा कार्य है । बच्चे नाराज होकर अपने अध्यापकों पर भी रिवाल्वर तान देते हैं ।

अमरीका में छात्र अपने अध्यापकों को सम्मान सूचक शब्दों से नहीं पुकारते । वह कभी अपने अध्यापक को सर या साहब का संबोधन नहीं करते । वह सीधे नाम लेकर पुकारते हें, जैसे अपने मित्रों को पुकारते हैं । स्कूलों, कालेजों में खुले आम सिगरेट पीते हैं, परंतु छात्र आंदोलन नहीं होते । वहां कोई यूनियन नहीं है । राजनीतिक दल भी छात्रों को अपने कार्य में नहीं घसीटते । अब प्रश्न यह उठता है कि अमरीका में छात्रों में, विशेषत: छोटी आयु के बच्चों में बढ़ती हिंसा के लिए कौन जिम्मेदार है ? कानून या माता-पिता का लाड? बच्चे का अच्छी तरह विकास हो, उसके भीतर विद्यमान प्रतिभा का संपूर्ण विकास हो, इसके लिए संपूर्ण स्वतंत्रता और खुले व्यवहार की आवश्यकता है । बच्चे के विकास में परिवार, समाज या विद्यालय बाधक न हो, इसके लिए कानून भी आवश्यक है, परंतु यदि कानून की आड में बच्चे मानमानी करें, अपराध करें और समाज के लिए खतरा बन जाएं तो ऐसे कानून की कैसे हिमायत की जा सकती है? बच्चों में बढ़ती हिंसात्मक प्रवृत्ति पर अमरीका का प्रशासन, सामाजिक संस्थाएं यहां तक कि राष्ट्रपति भी चिंतित हैं । टी. वी. पर सामूहिक चर्चाएं होती हैं, सेमिनार होते हैं, लेख प्रकाशित होते हैं पर कोई मार्ग सुझाई नहीं दे रहा है ।◆